بِسۡمِ اللهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम

الحمد لله وحده والصلاة و السلام على من لا نبى بعده اما بعد :

अल्लाह के रसूल सल्ललाहु अलैही वसल्लम की ज़ौजा मुतह्हरा सय्यदा आएशा रज़ीअल्लाहु अनहा के पास एक यहुदीया औरत आई और आकर कहती हैं "अल्लाह आपको अज़ाब-ए-कब्र से बचाए"। सय्यदा आएशा रज़ीअल्लाहु अनहा फरमाती हैं कि जब मैंने यह बात सुनी तो मैने फौरन रसूल सल्ललाहु अलैही वसल्लम से सवाल कर दिया "क्या कब्र में अज़ाब होगा?" कहा "हां अज़ाब कब्र हक़ है" । सय्यदा आएशा फरमाती हैं "मैं फिर देखती थी कि रसूल सल्ललाहु अलैहे वसल्लम जब भी नमाज़ पढ़ते कब्र की अज़ाब से अल्लाह की पनाह तलब करते" । (सहीह बुखारी 1372)

मौत एक ऐसी हक़िक़त है जिस्का कोई शख़्स ईन्कार नही कर सकता । हर नफ्स को मौत से दोचार होना ज़रूरी है । कुरआन में अल्लाह त'आला का फरमान है

كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ ٱلۡمَوۡتِۗ (आले इमरान 185)

"हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है"

दुनिया का हर इन्सान इस हक़िक़त को स्वीकार करता है कि उसकी दुनिया की ज़िन्दगी अस्थायी (temporary) और मिट जाने वाली है। एक रोज़ सब कुछ छोड़ कर उसको मौत का कड़वा घोंट पीना पड़ेगा, जिसके लिए किसी उम्र की क़ैद नहीं। ये दुनिया की ज़िन्दगी एक सफर है जो हमेशा बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी की तरफ तेज़ी से बढ़ रहा है और हर सांस इन्सान को अपनी मन्ज़िल के क़रीब करता जा रहा है। अक़लमन्द मुसाफीर न परदेस में दिल लगाता हैं और न अपने कर्तव्य से बेखबर होता है, बल्कि अपने काम से फ़ुर्सत मिलते ही अपने घर की तरफ वापसी की फ़िक्र करता है। हमारी असल मंज़िल और हमारा अपना घर जन्नत है। हमें अल्लाह त'आला ने एक ज़िम्मेदारी सौंप कर एक सीमित समय के लिए इस सफर पर रवाना किया है। और वह सौंपी गई ज़िम्मेदारी और इन्सानी ज़िन्दगी का मक़सद अल्लाह त'आला की ईबादत करके अल्लाह को राज़ी करना है। मौत के वक़्त ईमान पर साबित क़दमी ही एक मोमिन बन्दे की कामयाबी है।

मौत 'आलम-ए-दुनिया से 'आलम-ए- आखिरत में दाखिले का ज़री'या है, जहां से इन्सान की हमेशा बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी की शुरुआत होती है। 'आलम-ए- आखिरत के दो मरहले (मंज़िलें) हैं एक 'आलम-ए-बर्ज़ख यानी मौत से ले कर हिसाब वो किताब के लिए दोबारा उठाए जाने तक, और दुसरा मरहला दोबारा उठाए जाने के बाद यानी 'आलम-ए-हश्र से शुरू होगा। 'आलम-ए-बर्ज़ख में मिलने वाली सज़ा को 'अज़ाब-ए-कब्र कहा जाता है।

जो लोग इस दुनिया में अल्लाह की नाफरमानी करते हैं उन्हें आखिरत में ज़िल्लत , रुसवाई और 'अज़ाब का सामना करना पड़ेगा और कब्र में भी उनके लिए तरह तरह के 'अज़ाब हैं।

क़ब्र आख़िरत की सब से पहली मंजिल है और मरने के बाद इंसान को सब से पहले इसी गड्ढे का सामना करना होता है और नेक व बुरे इंसान की सज़ा व जज़ा (बदला) का मरहला यहीं से शुरू होता है। यानि अगर बंदा नेक है तो क़ब्र उसपर जन्नत का बाग़ बन जाती है और अगर बुरा है तो यही क़ब्र उस पर और ज़्यादा तंग कर दी जाती है |

जैसा कि उपर बुखारी की हदीस में रसूल सल्ललाहु अलैही वसल्लम ने ब्यान फरमाया कि अज़ाब कब्र हक़ है और इतना ज़्यादा भयानक और डरावना है कि आप सल्ललाहु अलैही वसल्लम ने फरमाया "मुझे ये अंदेशा न होता कि तुम (खौफ और दहशद से) मुर्दों को दफनाना ही छोर दोगे तो मैं ज़रूर अल्लाह त'आला से ये दुआ करता कि वह तुम्हें भी अज़ब-ए-कब्र सुना दे जो मैं सुनता हूँ। (मुस्लिम 2867)

अल्लाह के रसूल सल्ललाहु अलैही वसल्लम ने अपनी उम्मत को कब्र के अज़ाब से पनाह मांगने की ताकीद की है और ऐसे आ'माल सिखाए हैं जिस्को अपनाकर हम कब्र के अज़ाब से बच सकते हैं। अहादीस की रौशनी में कब्र के अज़ाब के असबाब और उस से बचने वाले कुछ आ'माल का ज़िक्र किया जा रहा है ताकी उस पर अमल करके हम अपने आप को क़ब्र के अजाब से बचा सकें। अल्लाह से दुआ है कि वह हम सब को अज़ाब-ए-कब्र से सुरक्छित रखे। आमीन

क़ब्र के अज़ाब का कारण

अल्लाह के साथ शिर्क (किसी को साझीदार बनाना) और कुफ्र करना

इस बात का प्रमाण कि शिर्क क़ब्र के अज़ाब के कारणों में से एक कारण है, ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है कि उन्होंने फरमाया :

"नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू नज्जार के एक बगीचे में अपने एक खच्चर पर सवार थे और हम आप के साथ थे कि सहसा आप का खच्चर मुड़ गया और क़रीब था कि आप को गिरा दे, और वहाँ छ: या पाँच या चार क़ब्रें दिखाई दीं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "इन क़ब्रों वालों को कौन जानता है? एक आदमी ने कहा : मैं। आप ने कहा : "ये लोग कब मरे थे? उसने कहा : शिर्क के ज़माने में मरे थे ... तो आप ने फरमाया: "इस उम्मत को उसकी क़ब्रों में आज़माया जाता है, यदि यह भय न होता कि तुम मुर्दों को गाड़ना छोड़ दोगे, तो मैं अल्लाह तआला से प्रार्थना करता कि वह तुम्हें भी क़ब्र की कुछ वह यातना सुना दे जो मैं सुनता हूँ।" ... फिर आप ने हमारी ओर अपना चेहरा किया और फरमाया: नरक की यातना से अल्लाह तआला की पनाह मांगो ..." (मुस्लिम हदीस संख्याः 2867)

उक्त हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान : "शिर्क के ज़माने में मरे थे।" इस बात का प्रमाण है कि शिर्क क़ब्र के अज़ाब का कारण है।

पेशाब से पवित्रता प्राप्त न करना, और लोगों के बीच गिबत और चुगली खाते फिरना

इब्न अब्बास रजीयल्लाहु अन्हु से रिवायत है की रसूल सल्लाल्लाहु अलैही वसल्लम का गुज़र दो क़ब्रों पर हुआ तो आप ने दो मुर्दा इन्सानों की आवाज़ सुनी जिन्हें उनकी कब्रों में अज़ाब हो रहा था। आप सल्लाल्लाहु अलैही वसल्लम ने फ़रमाया कि इन दोनों के मुर्दों पर अज़ाब हो रहा है और किसी बड़े गुनाह की वजह से उन्हें अज़ाब नही हो रहा है। उन्मे से एक शख़्स चुग़लख़ोर था और दूसरा पेशाब के छींटों से नही बचता था। फिर आप सल्लाल्लाहु अलैही वसल्लसम ने एक हरी शाख मंगवाई और उसके दो टुकरे करके दोनों की क़ब्रों पर गार दिया और फिर फ़रमाया शायद की उनके अज़ाब में उस वक़्त तक के लिए कमी कर दी जाए जब तक ये सूख न जाए। (बुख़ारी 6055)

तथा इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "सामान्य रूप से क़ब्र का अज़ाब पेशाब की वजह से है, अत: उस से बचो।" (इसे दारक़ुत्नी ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सहीहुत्तरग़ीब (1/152) में सहीह कहा है।)

क़ब्र के अजाब से बचाने वाले आ'माल

1. सूरा मुल्क की तलावत

सय्यादना अब्दुल्लाह बिन मसउद रजीयल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि रात को मामूल के साथ सुरा मुल्क की तलावत करने वाले को जब कब्र में दाखिल किया जाएगा, तो यह अज़ाब से हिफाज़त करेगी। (अल-मुअज्जम-अल-कबीर लिल-तिबरानी 8652)

एक दुसरी हदीस में है :

सय्यादना अबू हुरैरा रजीयल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लालहु अलैही वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरान करीम की एक सुरत, सूरा मुल्क अपने पढ़ने वाले के लिए शिफ़ारिश करेगी, यहाँ तक कि उसको बख़्स दिया जाएगा। (अबू दावूद1400)

2. कब्र के अज़ाब से बचने की दुआ

अबू हुरैरा रज़ीअल्लाहु अनहू से रिवायत है कि आप सल्लालहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया तुम में से कोई जब तशह्हुद में बैठे तो ये चार चिज़ों के बारे में ज़रूर अल्लाह से पनाह मांगे और इस तरह दुआ करे।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ"

"ऐ अल्लाह मैं जहन्नम की अज़ाब से और कब्र की अज़ाब से और ज़िन्दगी और मौत के आज़माइश से और मसीह दज्जाल के फितने के शर से तेरी पनाह में आता हूं "। (सहीह मुस्लिम 588a)

अल्लाह त'आला हम सब को अज़ब-ए-कब्र से महफूज़ रक्खे आमीन।